GEOGRAPHICAL DISCOVERIES(PART-1)

FOR:U.G.PART-1,PAPER-2
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

- 15 वी शताब्दी के अंत और 16 वीं सदी के आरंभ में यूरोपीय नाविकों ने कई दुस्साहसिक समुद्री यात्राएं करके नये नये देशों की खोज की तथा पूर्व के लिये नए और बेहतर मार्ग ढूंढ़ निकाले । उनकी यही कोशिश भौगोलिक खोजें के नाम से जानी जाती है। यूरोपीय देशों में **पुर्तगाल** ने भौगोलिक खोजों के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई थी। आगे चलकर **स्पेन**, **नीदरलैण्ड**, **फ्रांस**,**और इंग्लैंड** ने भी अपना योगदान दिया था। 1453 में तुर्कों द्वारा कॉन्स्टैनिटनोपल पर अधिकार करने के

पृष्ठभूमि

बाद पश्चिमी यूरोपीय देशों के लिए यूरोप और पूर्व के मध्य एशिया माइनर और सीरिया से होकर जाने वाली भू-क्षेत्रीय मार्ग अवरुद्ध हो चुका था।बार्तोलोम्यू डियाज,कोलंबस, वास्कोडिगामा आदि ने अफ्रीका, एशिया और अमेरिका में अज्ञात क्षेत्रों की खोज की। इसमें नवीन तकनीकी ज्ञान की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भौगोलिक खोजों की तत्कालीन आवश्यकता

- **लार्ड एक्टन** ने इतिहास में नई दुनिया की खोज को विश्व को मध्य काल से आधुनिक काल में प्रवेश कराने के दिशा में एक निर्णायक कारण माना है। 13 वीं सदी के अंत में दिशा सूचक यंत्र **कुतुबनुमा** तथा बाद में **एस्ट्रोलोव** (अक्षांश जानने का यंत्र) तथा **सैक्सटैन्ट** के अविष्कार ,उन्नत मानचित्र के निर्माण, अधिक पाल वाले और चप्पू से चलने वाले जहाजों के निर्माण से अब संभव हो गया की लंबी समुद्री यात्रा द्वारा पश्चिम से पूर्व की ओर पहुंचा जा सकता है।

भौगोलिक खोज का कारण

- वाइकिंग्स तथा वेनेशियन व्यापारी **मार्कोपोलो** के अनुभवों ने 15वीं और 16वीं शताब्दी में यूरोपीयों को नई भौगोलिक खोजों के लिए प्रेरित किया था ।
- यूरोपीय देशों में एशियाई वस्तुओं की भारी मांग थी। इन वस्तुओं में सिल्क, सूती कपड़े, कालीन, जवाहरात, विभिन्न तरह के मसाले ,खदान, चीनी आदि वस्तुएं शामिल थे। ये चीजें या तो यूरोप में मिलती नहीं थी या यूरोपीय वस्तुओं से बेहतर होती थी। इन एशियाई वस्तुओं तक पहुंचने का सीधा रास्ता यूरोपीय लोगों के पास नहीं था।व्यापारी भारत, चीन और पूर्वी

भौगोलिक खोज का कारण

- द्वीप समूहों से नाव के द्वारा वहां के मालों को भूमध्य सागर के बाजारों में लाते थे। भूमध्यसागर के तट पर स्थित इटालियन बंदरगाह वेनिस,जेनोवा आदि शहरों को पूर्वी व्यापार का एकाधिकार प्राप्त था ।यहां तक आते-आते चीजों की कीमतें काफी बढ़ जाती थी ।इसलिए पुर्तगाली और स्पेनी व्यापारी इटालियन शहरों के आधिपत्य को समाप्त करने और पूर्वी देशों के साथ सीधा व्यापार करने के उद्देश्य से नए मार्गों की खोज के लिए नाविकों को प्रोत्साहन दिया।

भौगोलिक खोज का कारण

- भौगोलिक खोजों के पीछे स्पेनवासियों का मिशनरी उत्साह भी शामिल था। आइबेरियन प्रायद्वीप में इस्लामी शक्ति पर स्पेन वासियों की विजय ने उनमें नया धार्मिक उत्साह पैदा किया ।इस उत्साह ने उन्हें गैर ईसाई लोगों में ईसाई धर्म के प्रचार की प्रेरणा दी ।इस भावना से भी वे समुद्र पार जाने को तैयार हुए। भौगोलिक एवं तकनीकी ज्ञान ने समुद्री यात्राओं को बल प्रदान किया।

भौगोलिक खोजों में पुर्तगाल की भूमिका

- यूरोपीय देशों में पुर्तगाल ने भौगोलिक खोजों के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई थी ।1415 ई. में अफ्रीका के समुद्री तट स्यूटा पर पुर्तगाल का अधिकार हो जाने के बाद भौगोलिक खोजों के लिए अनुकूल वातावरण विकसित हो गया था। पुर्तगाल के **राजकुमार हेनरी** (1399-1460)इस दिशा में पहल की। उसे **हेनरी द नैविगेटर** कहा जाने लगा। इसने सैग्रेस के तट पर एक अनुसंधान केंद्र की स्थापना की और वहां से खगोलशास्त्रियों, पोत निर्माताओं, मानचित्र विशेषज्ञों आदि की सहायता से नाविक अभियान भेजने प्रारंभ किये।

भौगोलिक खोज में पुर्तगाल की भूमिका

उसके प्रयासों का परिणाम अजोर और मेडेरिया दीपों की खोज के रूप में दिखाई पड़ा।

- 1488 में पुर्तगाली नाविक **बार्तोलोम्यू डियाज** ने अफ्रीका के दक्षिणी छोर का चक्कर लगाया जो बाद में **उत्तमाशा अंतरिप**(Cape of Good Hope)कहलाया।
- डियाज डी कैम आदि ने इसी वर्ष में अफ्रीकी महाद्वीप के समूचे पश्चिमी और दक्षिणी तटीय क्षेत्रों की खोज कर ली थी।

भौगोलिक खोज में पुर्तगाल की भूमिका

- मैनुअल दि फार्चूनेट के संरक्षण में 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा** ने अरब मार्गदशकों की सहायता से दक्षिण अफ्रीका होते हुए पश्चिमी यूरोप से भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज की थी। इस यात्रा के दौरान वास्कोडिगामा 90 दिनों तक जमीन से औझल रहा जो कोलंबस के अभियान से 3 गुना अधिक था। **कालीकट** के समुद्री तट पर पहुंचकर उसने भारत में औपनिवेशिक शासन की नींव का पहला पत्थर रखा।

भौगोलिक खोज में पुर्तगाल की भूमिका

- वास्कोडिगामा ने कहा था कि वह मसालों की प्राप्ति और ईसाई धर्म के प्रचार हेतु भारत पहुंचा है। वास्कोडिगामा अपनी समुद्र यात्रा के खर्च से साठ गुना अधिक कीमत का माल लेकर वापस लौटा।
- वास्कोडिगामा से उत्साहित होकर पुर्तगाली 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में श्रीलंका एंव सुदूर पूर्व में जावा सुमात्रा तक पहुंच गये।1517 ई. में उन्होंने चीन के कैंटन में अपना स्थाई बस्ती स्थापित की और 1542 ई.तक वह जापान भी पहुंच गये।

भौगोलिक खोज में पुर्तगाल की भूमिका

- सन 1500 ई. में पुर्तगाली नाविक **कैब्राल** ने अपने भारतीय अभियान में गलती से पश्चिम की ओर चलते-चलते दक्षिण अमेरिका के पूर्वी छोर तक पहुंच गया। इस प्रकार ब्राजील में पुर्तगाली साम्राज्य की नींव डाली गई। पूर्वी गोलार्द्ध में पुर्तगाली औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार अफ्रीका में मोजांबिक तथा मेडागास्कर में तथा भारत में,गोवा ,दमन, दिउ, बाम्बे (बाद में अंग्रेजों के अधीन) तक हो गया।

स्पेन की भूमिका

- पुर्तगाल से प्रेरित होकर स्पेन अपने नाविकों को पश्चिम की ओर भेजा। 15 वीं सदी के अंत तक शिक्षित लोगों को यह विश्वास हो चला था कि दुनिया गोल है और पश्चिम की ओर चलकर भी पूर्व की ओर पहुंचा जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर **जेनोवा** के साहसी नाविक **क्रिस्टोफर कोलंबस** ने स्पेन के शासक **फर्डिनेंड** व **रानी आइसाबेला** के प्रोत्साहन से भारत की खोज के लिए **1492 ई.** में यात्रा प्रारंभ की।

स्पेन की भूमिका

33 दिन की यात्रा के बाद कोलंबस एक नई धरती पर पहुंचा। कोलंबस ने सोचा कि उसनें भारत भूमि पर पहुंचने में सफलता पा ली है किंतु वह भारत नहीं बल्कि नई दुनियाँ (अमेरिका)थी। बाद में **इटली** का नाविक **अमेरिगो** भी इसी पर पहुंचा ।अमेरिगो के नाम पर इस स्थान का नाम **अमेरिका** पड़ा।

- कोलंबस द्वारा 1492 ई. में नई दुनिया की खोज के न्यू स्पेन, पेरू, अर्जेंटीना, कोलंबिया, वेस्टइंडीज, मैक्सिको में अपने उपनिवेश स्थापित किया।

स्पेन की भूमिका

- पोन्स द लियों,द सोटो और कोरोनेडो आजकल के संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी भाग को ढूंढ निकाला। बल्बोआ पनामा को पार करते हुए प्रशांत महासागर के तट पर पहुंच गया।**1519** में **मैगलन** ने सारी दुनिया का चक्कर लगाया।

To be continued....